Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2021 = 7.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, MAY-JUNE, 2021, VOL- 8/65

भारत–म्यांमार सम्बन्धः ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य एवं वर्तमान स्थिति

Pritam Kumar

Assistant Professor, Department of Defence and Strategic Studies, Sri Varshney College Aligarh, U.P.

Paper Received On: 21 JUNE 2021
Peer Reviewed On: 30 JUNE 2021
Published On: 1 JULY 2021

Abstract

1992 से आज तक की अवधि में या भारत और म्यांमार के संबंधों के तीसरे चरण में म्यांमार के प्रति भारतीय नीति में स्पष्ट परिवर्तन का पता चलता है, 1991–1992 वह समय था जब भारत ने बहुत ध्यान से तेजी से बढ़ रही दक्षिण पूर्व एशियाई अर्थव्यवस्थाओं के साथ संबंध द्वारा आर्थिक और सामारिक प्रभाव हासिल करने के लिए अपनी 'पूर्व की ओर देखों नीति' प्रारम्भ की। म्यांमार के साथ समझौता भारत के नजरिए से सामयिक मांग है क्योंकि म्यांमार के पास दक्षिण पूर्व एशिया में प्रविष्टि के लिए भारत का प्रवेश द्वार है।

Keywords: *सामरिक महत्व, विदेश नीति, आर्थिक हित, नीतिगत समझौते।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

प्रविधिः अध्ययन की प्रकृति के अनुरूप, प्रस्तुत अध्ययन में ऐतिहासिक–वर्णनात्मक शोध प्रविधि का प्रयोग किया गया है, जो कि पूर्णतः द्वैतीयक श्रोतों पर आधरित है।

विवेचना एवं निष्कर्ष

पन्द्रहवीं सदी में उत्कीर्ण कराये गये कल्याणी के शिलालेखों में रामञ्ञदेश का सुवर्णभूमि के रूप में रामंजदेश का सुवर्णभूमि के रूप में उल्लेख है, रामंजदेष की स्थिति वर्मा में सालविन नदी के मुहाने के समीपवर्ती प्रदेश में थी। वर्तमान समय में जिस जाति का इस देश में प्रधान रूप से निवास है वह भ्रम्म या ब्रह्म है, उसी से इस देश का नाम ब्रह्मा पड़ा जो अपभ्रंश होकर अंग्रेजी में वर्मा हो गया और वर्ष 1989 से म्यांमार के नाम से जाना जाता है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

हिमालय के विपरीत उत्तर दक्षिण दिशा में फैली हुई अराकानयोमा पर्वत श्रेणी इस देष को भारत से पृथक करती है किन्तु यह पृथकता दो देशों के मध्य प्रयुक्त होने वाले पंथों के सम्बन्ध में वाधक रही हो ऐसा प्रतीत नहीं होता। दक्षिण पूर्व एशिया के अन्य प्रदेषों के समान वर्मा के साथ भी भारत का सम्बन्ध सबसे पूर्व व्यापार के लिए हुआ। प्राचीन भारतीय दक्षिण पूर्व एशिया के अनेक देशों से परिचित थे। इस समय वर्मा से मलाया तक के क्षेत्र को सुवर्ण भूमि का सुवर्णद्वीप कहा जाता था। वर्मा में इरावदी तथा उसके सहायक नदियों की रेत से अब भी सोना निकाला जाता है। इतिहासकार अलबरूनी ने लिखा है कि ‘‘जाबज के द्वीपों को हिन्दु लोग सुवर्णद्वीप कहते हैं।’’

भौगोलिक रूप से म्यांमार का क्षेत्रफल 6,76,552 वर्ग किलोमीटर या 2,61,218 वर्ग मील है। इसकी सीमाएं पष्चिम में भारत व बांग्लादेश, उत्तर व उत्तर पूर्व में चीन, पूरब में लाओस व थाईलैंड के साथ लगी हैं। हिंद महासागर क्षेत्र में म्यांमार का रणनीतिक महत्व है, क्योंकि यह पश्चिम में बंगाल की खाड़ी और दक्षिण में अंडमान सागर की ओर खुला है। भारत और म्यांमार निकटस्थ पड़ोसी के रूप में पांरगम्य हैं, भूगोल, इतिहास और प्राचीन काल से धर्म, संस्कृति तथा लोगों के पारस्परिक स्तर पर एक–दूसरे से जुड़े है। पटकाई पहाड़ियों से सटकर भारत और म्यांमार की सीमाएं 1,6432 किलोमीटर लम्बी है। साथ ही पूर्वोत्तर में म्यांमार की 2185 किलोमीटर सीमा चीन से लगती है।3 भारत के चार प्रदेष–मिजोरम, मणिपुर, नागालैंड और अरूणांचल प्रदेष म्यांमार की अंतर्राश्ट्रीय सीमा से सटे हुए हैं। इसके समानान्तर म्यांमार के 3 राज्य काचीन, सगॉग, चिन, की सीमा लगी है। भारत और म्यांमार के बीच ऐतिहासिक संपर्क पांचवीशताब्दी से है और तभी से उनके बीच व्यापार, वाणिज्य, धर्म कानून, राजनीतिक दर्शन और संस्कृति के क्षेत्र में परस्पर सामंजस्य रहा है।

स्वतंत्रता के बाद के समय में भारत का म्यांमार के साथ संबंधों को तीन महत्वपूर्ण चरणों में बांटा जा सकता है। पहला चरण– 1948 से 1962 के बीच, दूसरा चरण– 1962 से 1988 के बीच, और तीसरा चरण– 1988 से आज तक। भारत के लिए म्यांमार का रणनीतिक महत्व भारत के स्वतंत्र होने के पहले के0एम0 पाणिकर के शब्दों में एकदम स्पष्ट

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

था। जिन्होंने लिखा कि ''म्यांमार की सुरक्षा वस्तुतः भारत की प्राथमिक सरोकारों की सुरक्षा है जो म्यामांर की सीमाओं को अखंड देखने की म्यांमार की चिंता से कतई कम नहीं है। असल में, भारत की किसी जिम्मेदारी को म्यांमार की सुरक्षा करने से अधिक बड़ा नहीं माना जा सकता। इस प्रकार, भारत की सुरक्षा व्यवस्था का एक महत्वपूर्ण अंग म्यांमार है।

स्वतंत्रता के बाद के आरंभिक वर्शो में भारत–बर्मा के बीच करीबी संबंध था और गुटनिरपेक्ष आंदोलन (एनएएम) के गठन में नेरूह तथा यू नू दोनों ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई थी। दोनों देषों ने ऐसे मैत्री–समझौते पर हस्ताक्षर किया जो यदि देानों में से किसी भी पक्ष ने पांच वर्षो में उसकी मियाद पूरी होने के छह माह पहले उसे समाप्त करने की नोटिस नहीं दिया तो ''उसके बाद सदैव'' बना रहने वाला था। उन वर्षो में भारत ने म्यांमार को सैनिक और आर्थिक सहायता प्रदान किया। हांलाकि 1949 से म्यांमार सरकार को अनेक आंतरिक समस्याओं का सामना करना पड़ा। सेना ने 1958 में सत्ता पर नियंत्रण कर लिया,24 पर कानून और व्यवस्था को बहाल करने के बाद उसे वापस नागरिक सरकार को सौंप दिया। उसने लगभग 18 महीने सत्ता संभालने के बाद गद्दी छोड़ दिया था। पर यह प्रवृत्ति अधिक दिनों तक नहीं चल सकी और परिस्थितियॉ 1962 में उलट गई, जब जनरल ने विन ने देष को टूटने से बचाने के नाम पर सत्ता–पलट कर दिया और प्रधानमंत्री यू नू को हटाकर उनका स्थान ग्रहण कर लिया।25 इस सैनिक जनरल ने सम्पूर्ण सत्ता पर कब्जा कर लिया, 1947 के संविधान को निरस्त कर दिया और समाजवादी आर्थिक प्राथमिकताओं के साथ सैनिक शासन कायम किया। ने विन ने दूसरे सैनिक षासकों की तरह बर्मा में जीवन के प्रत्येक पहलुओं पर अपना प्रभुत्व कायम करना आरंभ कर दिया। उसने अपनी पार्टी–म्यांमार सोशलिस्ट प्रोग्राम पार्टी (बीएसपीपी) को छोड़कर सभी पार्टियों को कुचल दिया। इसका अर्थ अर्थव्यवस्था पर कठोर नियंत्रण, आजादी की अस्वीकृति और भारत समेत समूची दुनियॉ से बाध्यतामूलक अलगाव के रूप में दिखा। तभी से भारत का म्यांमार के साथ संबंध एकदम बिगड़ता गया।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

सत्ता पर कब्जा करने के बाद जनरल ने विन ने म्यांमार के सभी निजी उद्यमों का राश्ट्रीयकरण कर लिया26 और वहां बसे भारतीयों के निष्कासन का आदेश जारी कर दिया,27 जिससे द्विपक्षीय संबंध अवरूद्ध हो गए। भारत और म्यांमार के बीच के संबंध 1962 में चीन के हाथों भारत के पराजय और चीन के साथ म्यांमार के बढ़ते रणनीतिक तथा आर्थिक संबंधों की वजह से निम्नतम स्तर पर पहुॅच गया। भारत और चीन के बीच 1962 के सीमा संघर्श के दौरान भी म्यांमार ने निरपेक्ष रूप अपनाया और दोनों में से किसी की नाराजगी लेना नहीं चाहा। भारत द्वारा म्यांमार की इस चुप्पी की व्याख्या चीन की ओर झुकाव के रूप में किया गया और स्वाभाविक रूप से भारत–बर्मा संबंध बड़े पैमाने पर प्रभावित हुए। पैकिंग और रंगून के बीच सौहार्दपूर्ण समझदारी की प्रक्रिया दरअसल 28 जनवरी 1960 को चीन बर्मा सीमा समझौता, मैत्री–समझौता और परस्पर अनाक्रमण पर हस्ताक्षर होने से आरंभ हुई,28 जब जनरल ने0 विन म्यांमार के कार्यवाहक सरकार का नेतृत्व कर रहे थे। चीन के प्रति म्यांमार के नेतृत्व की बदलती मानसिकता की प्रतिक्रया भी भारत–म्यांमार संबंधों में हुई। इस प्रकार, 1962 से 1988 के बीच का दौर भारत और बर्मा के बीच सम्पूर्ण अलगाव और पार्थक्य का रहा। इस दौरान भारत का म्यांमार के प्रति अलगाव की नीति ने चीन को म्यांमार के साथ सौहार्दपूर्ण संबंधों को विस्तार देने का रणनीतिक अवसर दिया, इसके बावजूद कि पैकिंग का कम्युनिस्ट पार्टी आफ बर्मा को वैचारिक समर्थन निरंतर जारी रहा। भारत और म्यांमार के बीच विलगाव म्यांमार के अपदस्थ प्रधानमंत्री यू नू के मामले को लेकर बढ़ गया, जिन्होंने भारत में राजनीतिक शरण मांगी और नेहरू परिवार के साथ व्यक्तिगत मित्रता की वजह से उन्हें भारत में रहने की अनुमति दे दी गई। उन्होंने 1974 से भारत में शरणी ली। इस प्रकार, इंदिरा गांधी के प्रधानमंत्रित्व–काल में भारत में भारत ने म्यांमार के साथ कोई संपर्क नहीं रखा और लोकतांत्रिक आंदोलन का दमन तथा मानवाधिकारों की अवहेलना को लेकर आलोचनात्मक रूख अनाए रखा। हालॉकि भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी ने 1987 में म्यांमार का दौरा किया, फिर भी भारत–बर्मा संबंधों में कोई खास प्रगति नहीं हुई। भारत–बर्मा संबंध उस समय बहुत ही खराब हो गए, जब 1988 में भारत ने म्यांमार के लोकतंत्र

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

समर्थक लहर का समर्थन किया राजीव गांधी ने राज्य कानून और व्यवस्था पुनर्बहाली परिषद (एसएलओआरसी' अर्थात स्लोर्स) के सत्ता में बने रहने की आलोचना की और म्यांमार के लोकतंत्र समर्थक आंदोलन को नैतिक समर्थन देने की घोशणा की। वास्तव में, म्यांमार में 1988 के विद्रोह के समय भारत पहला पड़ोसी देश था जो लोकतंत्र के पक्ष में दृढ़ता से खड़ा था। रेगून स्थित भारतीय दूतावास लोकतंत्र–समर्थक कार्यकर्ताओं की सहायता करने में सक्रिय था और उसके अधिकारी बगावत के दौरान विपक्षी समूहों जैसे– अखिल म्यांमार छात्रसंघों के महासंघ (आल दम्यांमार फेडरेशन ऑफ स्टूडेंट्स यूनियन्स– एबीएफएसयू) और आंग सान सू की तथा यू नू जैसे नेताओं के संपर्क में थे। जब बर्मी नेताओं ने भारत–बर्मा सीमा होकर पलायन किया तो रंगून स्थित भारतीय दूतावास ने उन्हें भारत जाने के लिए आर्थिक सहायता प्रदान किया।29 भारत सरकार ने इन छात्रों के लिए मिजोरम और मणिपुर में शरणार्थी शिविर भी खोले। म्यांमार के सैनिक शासकों द्वारा लोकतांत्रिक आंदोलन के इस सैनिक

दमन के सिलसिले में भारत सरकार के चीन के विपरीत संयुक्त राष्ट्र अमेरिका और अन्य पश्चिमी देशों के साथ मिलकर म्यांमार के सैनिक शासन की खुलकर निंदा की और उसे अलग–थलग कर दिया। इसके साथ ही भारत मानवाधिकारों के हनन को लेकर बर्मा के सैनिक, शासकों के खिलाफ 1992 के संयुक्त राश्ट्र के निंदा प्रस्ताव का समर्थन था जो म्यांमार में 1990 के आम चुनावों में नेषनल लीग फार डेमोक्रेसी (एनडीएल) को अपार बहुमत मिलने के बाद आरंभ हुआ था और तब से लोकतंत्र समर्थक खासकर एनएलडी कार्यकर्ताओं के खिलाफ सैनिक शासन का दमनचक्र बढ़ता गया। स्लोर्स (एसएलओआरसी) विरोधी कार्यकर्ताओं को शरण देने की नई दिल्ली का पेषकष और लोकतंत्र के समर्थन में आवाज उठाना म्यांमार के सैनिक शासकों ने पसंद नहीं किया और थलसेना के प्रमुख तथा सत्ताधारी स्लोर्स के उपाध्यक्ष थान श्वे ने 2 फरवरी 1991 को एक गोपनीय परिपत्र जारी कर ''भारत को म्यांमार के आंतरिक मामलों में दखल देने वाला'' देश बताया। इस प्रकार, इस दौरान म्यांमार के प्रति भारत की नीति को सुविचारित कतई नहीं माना जा सकता जो पूर्णतः अपारदर्शी थी।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

भारत की विदेश नीति के मूल आधार

भा कीरत विदेश नीति मूलतः निम्नलिखित मूल्यों पर आधारित हैः–
(1) राष्ट्रीय हित, (2) राष्ट्रीय लक्ष्य (3) राष्ट्रीय उद्देश्य (4) राष्ट्रीय सिद्धांत (5) आतंरिक (गृह) एवं बाह्य परिवेश।

निष्कर्ष : चीन, भारतको अपने आर्थिक, राजनीतिक और सैन्य अभियान के लिए एक खतरे के रूप में मानता है वहीं भारत को आशंका है कि चीन और उसके सभी पड़ोसी देशों – पाकिस्तान, बांग्लादेश और म्यांमार ने उसको घेर लिया है, क्योंकि भारत की तुलना में तीनों देशों की चीन के साथ आर्थिक, रणनीतिक और सैन्य साझेदारी है। 1970 के दशक के बाद से म्यांमार के चीन के साथ घनिष्ट आर्थिक और सैन्य संबंध हैं।

म्यांमार के माध्यम से चीन, बंगाल की खाड़ी और अंडमान सागर में आसानी से प्रवेश पा सकता है कि जो भारत की सुरक्षा के लिए चिंता का एक कारण है। चीन म्यांमार को अपने लगभग 80 प्रतिशत रक्षा उपकरण प्रदान करता है। चीन में म्यांमार के कोको द्वीप पर अपनी नौसेनिक लिस्निंग और मौसम के पोस्टों की स्थापना की है, जो की भारत के लिए सामरिक असुरक्षा है। आर्थिक सहयोग के संबंध में, चीन व्यापार, वाणिज्य, ऊर्जा और बिजली की आपूर्ति सहित विभिन्न क्षेत्रेां में म्यांमार के साथ सहयोग कर रहा है। भारत की तुलना में म्यांमार के साथ चीन के संबंध सभी पहलुओं, राजनीतिक, आर्थिक, रणनीति और सैन्य, में बहुत मजबूत और प्रभावी रहे हैं। चीन विभिन्न विकास परियोजनाओं के लिए भी सहायता प्रदान करता है और कई ढांचागत परियाजनायें भी शामिल है। जैसे दक्षिणी चीनी क्षेत्र में कुनमिंग से केंद्रीय म्यांमार में मांडले तक की सडक का निर्माण करना। चीन और म्यांमार की प्राकृतिक संसाधनों के दोहन के लिए एक 30,000 वर्ग मील अपतटीय आर्थिक क्षेत्र स्थापित करने की योजना है। म्यांमार में चीन के प्रभुत्व की हिंद महासागर में भारत के समुद्री और आर्थिक हितों के प्रति एक खतरे के रूप में व्याख्या की गई है। 'दशकों तक म्यांमार के प्रति भारत की उदासीनता ने चीन को रणनीतिक कारणों के लिए स्थिति का लाभ उठाने के लिए एक वैक्यूम का संकेत दिया, इस प्रकार, चीनी प्रभाव का प्रतिकार करने, 'बढ़ने चीन' की चुनौती का मुकाबला करने और इस क्षेत्र में शक्ति का संतुलन सुनिश्चित करने के लिए

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

भारत–म्यांमार के रिश्तों में सुधार और पुनरूद्धार की अतिआवश्यकता है, जिसके लिए वर्तमान भारत सरकार पूर्ण रूप से सजग है।

(भारतीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी और म्यांमार के राष्ट्रपति श्री थेइन सेइन वर्ष 2014)

संदर्भ

आर0सी0 मजूमदार : हिन्दू कॉलीनीज इन द फार ईस्ट, पृ0 4,7

सत्यकेतु विद्यार्थी : दक्षिणपूर्व और दक्षिण एशिया में भारतीय विदेश नीति, श्री सरस्वती सदन, नई दिल्ली, 2017, पृ0 174

रवि चोपड़ा : भारतीय विदेश सम्बन्ध, 2018 पृ0 93.

भगवन्त विद्यालंकार : दक्षिण पूर्वी और दक्षिणी एशियाई देशों में भारतीय विदेश सम्बन्ध, श्री सरस्वती सदन, 2017, पृ0 28

K Ramanujan, - Adventures in Indian Diplomacy (New Delhi : Axis Pub., 2018), p. 78.

फ्रैंकेल, जोसेफ, द मेकिंग ऑफ द फारेन पालिसी (ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस,1968), पृ0 1.

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies